पुस्तकालय से लाभ

अन्य सम्बन्धित शीर्षक

- पुस्तकालय ज्ञान के भण्डार
- पुस्तकालय की उपयोगिता
- पुस्तकालय का महत्व
- पुस्तकें सच्ची मित्र
- पुस्तकालय और विद्यार्थी

रूपरेखा – १. प्रस्तावना, २. पुस्तकालय का महत्व, ३. पुस्तकालय के विभिन्न प्रकार, ४. पुस्तकालय से लाभ, ५. उपसंहार ।

प्रस्तावना — पुस्तक + आलय अर्थात् पुस्तकों के संग्रह का स्थान। अंग्रेजी की एक कहावत है- 'Knowledge is Power' अर्थात् ज्ञान ही शक्ति है। शक्ति के इस स्रोत 'ज्ञान को अनुभव से या फिर पुस्तकों, पत्रिकाओं, आदि के द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता है।' मानव-जीवन जितना जटिल हो गया है तद्नुसार उतने ही ज्ञान प्राप्त करने सम्बन्धी विषय और उप-विषय हो गए हैं जिनको जानने के लिए वर्तमान और भविष्य की आगामी पीढ़ियों को तत्सम्बन्धी ज्ञान हेतु पुस्तकों की नितान्त आवश्यकता होती है और होती रहेगी।

Gyansidhu Coaching Classes

पुस्तकालय का महत्व — जब तक लिपि और लेखन की सामग्री का विकास नहीं हुआ था तब तक तो स्मरण शक्ति और वाक् शक्ति द्वारा ज्ञान पीढ़ी-दर-पीढ़ी एक से दूसरे तक पहुँचता रहा, फिर संस्कृति और सभ्यता के विकास के साथ सभी साधन जुड़ते गए और आज कैसेट, कम्प्यूटर, आदि अनेक आधुनिक आविष्कार , जानकारी और उनके संग्रह के साधन उपलब्ध हैं फिर भी पुस्तकालयों और वाचनालयों का महत्व अपना अलग ही है। सम्पन्न पुस्तकालय में लगभग सभी विषयों की महत्वपूर्ण पुस्तकें, पत्रिकाएं संगृहीत होती रहती हैं और पढ़ने हेतु वितरित होती हैं। कुछ सन्दर्भ अन्य वहीं पढ़े जा सकते हैं। पुस्तकों की सुरक्षा, स्थान निर्धारण, पुस्तकों की सूची लेखक अथवा शीर्षक के अनुसार रजिस्टरों में लिखी जाती है

जिसे अंग्रेजी में कैटेलोगिंग (Cataloguing) कहते हैं। जिसको विशेषज्ञ पुस्तकालयाध्यक्ष व्यवस्थित करते रहते हैं। पुस्तकों और पुस्तकालयों के महत्व को समझकर B.Lib., M.Lib. Sc. की टेक्नीकल उपाधियों हेतु विशेष ज्ञान दिया जाता है। यह पूर्णतः वैज्ञानिक विषय हो चुका है।

पुस्तकालय के विभिन्न प्रकार——पुस्तकालय व्यक्तिगत, सार्वजनिक, सरकारी, विभागीय एवं शिक्षण संस्थाओं यथा विद्यालय, महाविद्यालय और विश्वविद्यालयों के होते हैं जिनमें रुचि और आवश्यकतानुसार विभिन्न विषयों की पुस्तकें अधिकृत व्यक्तियों को पढ़ने को मिल सकती हैं। पटना का खुदीराम पुस्तकालय, हैदराबाद और दिल्ली के पुस्तकालय सबसे अधिक प्रसिद्ध हैं जिनमें सभी विषयों की लाखों पुस्तकें, हस्तलिखित शोध-पत्र, आदि हैं। शोध छात्रों को तो सभी प्रकार के पुस्तकालयों की आवश्यकता पड़ जाती है।

पुस्तकालयों से लाभ - भिन्न रुचिर्हि लोकः" अर्थात् संसार के मनुष्यों की अपनी-अपनी रुचि होती हैं। कोई ज्योतिष, विज्ञान, धर्मशास्त्र, अभियान्त्रिकी, चिकित्सा सम्बन्धी विषयों में रुचि रखता है तो कोई साहित्य, ललित कलाओं, इतिहास, भूगोल, आदि के प्रेमी होते हैं। कोई भी व्यक्ति प्रकाशित होने वाली सभी पुस्तकें क्रय करके नहीं पढ़ सकता है। अतः ये पुस्तकालय उन लोगों की जिज्ञासाओं को शान्त करते हैं।

Gyansindhu Coaching Classes

पुस्तकालय में मनोरंजन, खेलकूद, आदि की अनेक पुस्तकें भी होती हैं जिनसे स्वस्थ ज्ञानवर्धक मनोरंजन प्राप्त होता है। दुर्लभ पुस्तकें पुस्तकालयों से ही प्राप्त हो सकती हैं जिनकी सहायता से ज्ञानवर्धन, शोध उपाधि प्राप्त होती है। प्रत्येक दिन की नई-नई खोजों, आविष्कारों एवं तथ्यों की संकलित जानकारियां पुस्तकों से ही प्राप्त हो सकती हैं। छात्रों, अध्यापकों के लिए तो आधुनिकतम नवीनतम जानकारी प्राप्त करना अत्यन्त वांछनीय होता है-जो विभिन्न विषयों की पुस्तकों, जर्नल्स, पत्रिकाओं से ही सम्भव है।

+अच्छे शिक्षार्थी, शिक्षक व अन्य व्यक्ति अपने समय का सदुपयोग पुस्तकालय, वाचनालय में करते हैं। कुछेक व्यक्ति पठन-पाठन के व्यसनी हो जाते हैं, उन्हें पुस्तकों के

अतिरिक्त कुछ भी अच्छा नहीं लगता है। ऐसे व्यसनी लोग सांसारिकता में अधूरे और असफल हो जाते हैं जैसा कहा गया है :

अपि शास्त्रेषु कुशलाः लोकाचार विवर्जिताः ।

सर्वे ते हास्यतां यान्ति यथा ते मूर्ख पण्डिताः।

इसीलिए कहा गया है—'अति सर्वत्र वर्जयेत्'। भारत में पुस्तकालयों की स्थिति दयनीय है। कारण, प्रथम तो पुस्तकालयों के लिए सरकार की अनुग्रह राशि अत्यल्प है, दान में दी गई पुस्तकें सत्तापक्ष के राजनीतिक पूर्वाग्रह से ग्रस्त प्रचारात्मक मात्र, फिर भ्रष्टाचार में लिप्त अधिकारियों की धन व पुस्तकों की लूट, अनुपयुक्त पुस्तकों की खरीद व उसमें भी कमीशन और अन्त में अनुभव और उपाधि रहित व्यक्तियों की पुस्तकों की देखरेख हेतु नियुक्ति जिससे पुस्तकों का रख-रखाव व वितरण अवैज्ञानिक होता है। परिणामस्वरूप अनेक पुस्तकालयों में ताले लग गए अथवा पुस्तकें दीमकों का आहार बन गईं।

उपसंहार— पुस्तकें मानव समाज की गुरु व सच्ची मित्र हैं। मुझे तो नई पुस्तक में नया मित्र दिखता है :

मैं जो नया ग्रन्थ विलोकता हूं, भाता मुझे सो नव-मित्र सा है।
देखूं उसे मैं नित बार-बार, मानो मिला मित्र मुझे पुराना।।

Swansidhu Coaching Classes

वास्तव में पुस्तकों का सही चयन, उनकी समुचित देखभाल व रख-रखाव, गांव-गांव में पुस्तकालय खोलना और उन्हें आर्थिक संकटों से बचाना, सही ईमानदार व्यक्तियों को पुस्तकालय चलाने का भार सौंपना, नियम कानूनों का पूर्णतः पालन, दबाव व पक्षपात से रहित होना, सर्व जन हिताय पुस्तकों की चोरी, पाठकों की संग्रह वृत्ति को दमित करना भी आवश्यक है।